शिव चालीसा | By Mukesh Bagda |

दोहा
जय गणेश गिरिजा सुवन, मंगल मूल सुजान।
कहत अयोध्यादास तुम, देहु अभय वरदान॥

चौपाई

जय गिरिजापति दीन दयाला।
सदा करत संतत प्रतिपाला॥

भाल चन्द्रमा सोहत नीके।
कानन कुंडल नागफनी के॥

अंग गौर शिर गंग बहाये।
मुण्डमाल तन छार लगाये॥

वस्त्र खाल बाघम्बर सोहे।
छवि को देखि नाग मुनि मोहे॥

मैना मातु की हवे दुलारी।
बाम अंग सोहत छवि न्यारी॥

कर त्रिशूल सोहत छवि भारी।
करत सदा शत्रुन क्षयकारी॥

नंदी गणेश सोहैं तहँ कैसे।
सागर मध्य कमल हैं जैसे॥

कार्तिक श्याम और गणराऊ।
या छवि को कही जात न काऊ॥

देवन जबहीं जाय पुकारा।
तबहीं दुख प्रभु आप निवारा॥

किया उपद्रव तारक भारी।
देवन सब मिलि तुमहि जुहारी॥

तुरत षडानन आप पठायो।
लव निमेष महँ मारि गिरायो॥

आप जलंधर असुर संहारा।
सुयश तुम्हार विदित संसारा॥

त्रिपुरासुर सन युद्ध मचाई।
सबहि कृपा कर लीन बचाई॥

किया तपहि भागीरथ भारी।
पुरब प्रतिज्ञा तासु पुरारी॥

दानिन महं तुम सम कोउ नाहीं।

सेवक स्तुति करत सदाहीं ॥

वेद नाम महिमा तव गाई ।
अकथ अनादि भेद नहि पाई ॥

प्रगट उदधि मंथन में ज्वाला ।
जरत सुरासुर भये विहाला ॥

कीन्ह दया तहँ करी सहाई ।
नीलकण्ठ तब नाम कहाई ॥

पूजन रामचंद्र जब कीन्हा ।
जीत के लंक विभीषण दीन्हा ॥

सहस कमल में हो रहे धारी ।
कीन्ह परीक्षा तबहिं पुरारी ॥

एक कमल प्रभु राखेउ जोई ।
कमल नयन पूजन चहँ सोई ॥

कठिन भक्ति देखी प्रभु शंकर ।
भये प्रसन्न दिए इच्छित वर ॥

जय जय जय अनन्त अविनाशी ।
करत कृपा सब के घटवासी ॥

दुष्ट सकल नित मोहि सतावै ।
भ्रमत रहौं मोहि चैन न आवै ॥

त्राहि त्राहि मैं नाथ पुकारो ।
यहि अवसर मोहि आन उबारो ॥

लै त्रिशूल शत्रुन को मारो ।
संकट से मोहि आन उबारो ॥

मात-पिता भ्राता सब कोई ।
संकट में पूछत नहि कोई ॥

स्वामी एक है आस तुम्हारी ।
आय हरहु अब संकट भारी ॥

धन निर्धन को देत सदाहीं ।
जो कोई जाने सो फल पाहीं ॥

अस्तुति केहि विधि करौं तुम्हारी ।
क्षमहु नाथ अब चूक हमारी ॥

शंकर हो संकट के नाशन ।
विघ्न विनाशन मंगल कारण ॥

योगी यति मुनि ध्यान लगावैं ।
नारद शारद शीश नवावैं ॥

नमो नमो जय नमः शिवाय।
सुर ब्रह्मादिक पार न पाय॥

जो यह पाठ करे मन लाई।
ता पर होत है शंभु सहाई॥

ऋणियां जो कोई हो अधिकारी।
पाठ करे सो पावन हारी॥

पुत्र हीन कर इच्छा जोई।
निश्चय शिव प्रसाद तेहि होई॥

पंडित त्रयोदशी को लावे।
ध्यान पूर्वक होम करावे॥

त्रयोदशी व्रत करे हमेशा।
ताके तन नहीं रहे कलेशा॥

धूप दीप नैवेद्य चढ़ावे।
शंकर सम्मुख पाठ सुनावे॥

जन्म जन्म के पाप नसावे।
अन्त धाम शिवपुर में पावे॥

कहे अयोध्या आस तुम्हारी
जान शकल दुःख हरहु हमारी ॥

दोहा
नित्य नेम कर प्रात ही पाठ करो चालीस
तुम मेरी मनोकामना पूर्ण करो जगदीश
मंगसर छठि हे मन्त्र तू सम्वत चौसठ जा
स्तुति चालीसा शिव ही पूर्ण किये कल्याण

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%b6%e0%a4%bf%e0%a4%b5-%e0%a4%9a%e0%a4%be%e0%a4%b2%e0%a5%80%e0%a4%b8%e0%a4%be-by-mukesh-bagda/